सच्चाई स्वीकारी

हिंदू सभा मंदिर पर हुए हमले की ट्रूडो ने की निंदा, उन्होंने कहा कि कनाडा में हिंसा और नफरत के लिए कोई जगह नहीं है

'कनाडा में हैं खालिस्तान समर्थक', जस्टिन ट्रूडो ने खुद ही खोली अपनी पोल

● मंथन विदेश ब्यूरो

ओटावा। कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने खुलकर यह बात स्वीकार की है कि कनाडा में खालिस्तान समर्थक हैं। भारत लंबे समय से कनाडा पर खालिस्तान समर्थक अलगाववादियों को पनाह देने का आरोप लगाता आ रहा है। अब ट्रूडो ने भी खुलकर यह बात स्वीकार कर ली है। मगर उन्होंने कहा कि कनाडा में रहने वाले खालिस्तान समर्थक सिख समुदाय का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं। ट्रूडो ने कहा कि कनाडा में पीएम मोदी के कई हिंदू समर्थक हैं। मगर वो भी यहां पूरे हिंदू समुदाय का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं।

हिंदू मंदिर पर हमले की ट्रूडो ने की निंदा

तीन नवंबर को कनाडा के ब्रैम्पटन स्थित हिंदू सभा मंदिर पर चरमपंथियों ने हमला किया था। इस दौरान कट्टरपंथियों ने महिलाओं और बच्चों तक पर हमला किया था। इस हमले का वीडियो सामने आने के

बाद व्यापक आक्रोश फैला। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी हमले की निंदा की। छह नवंबर को जस्टिन ट्रूडो ने हाउस ऑफ कॉमन्स में हिंसा की निंदी की। उन्होंने कहा कि इसके लिए हिंदू और सिख समुदाय को जिम्मेदार नहीं ठहराया जाना चाहिए। हिंसा करने वाले लोग हिंदू और सिख समुदाय का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं।

कनाडा को अखर गई जयशंकर की पीसी

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का झंडाबरदार बना कनाडा अपनी हरकतों से बाज नहीं आ रहा है। भारतीय विदेश मंत्री एस जयशंकर की प्रेस कॉन्फ्रेंस दिखाने पर उसने ऑस्ट्रेलिया के न्यूज चैनल 'ऑस्ट्रेलिया टुडे' के सोशल मीडिया पेज को ब्लॉक कर दिया है। मामला बढ़ने पर ऑस्ट्रेलिया टुडे ने भी अपना पक्ष रखा। उसने कहा कि हम महत्वपूर्ण बातों को जनता के सामने लाते रहेंगे। हम पर इन कदमों का कोई असर नहीं होगा। पारदर्शिता और स्वंतत्र प्रेस हमारी प्रतिबद्धता है।

पिछले साल कनाडा के सरे में एक गुरुद्वारे के बाहर कनाडाई आतंकी हरदीप सिंह निज्जर की अज्ञात व्यक्तियों ने गोली मारकर हत्या कर दी थी। इसके बाद कनाडा ने हत्या में भारत के शामिल होने का आरोप लगाया। भारत ने कनाडा से आरोपों के समर्थन में सुबूत की मांग की। मगर कनाडा अभी तक भारत को सुबूत नहीं सौंप सका है। विवाद इतना बढ़ा कि भारत ने कनाडा से अपने राजनयिकों को वापस बुला लिया और कनाडा के राजनयिकों को देश से निकाल दिया। कनाडा में कई खालिस्तान समर्थक हैं। मगर वह पूरे सिख समुदाय की नुमाइंदगी नहीं करते हैं। यहां हिंसा, असहिष्णुता व धमकी के लिए कोई जगह नहीं है। जस्टिन ट्रूडो , कनाडाई प्रधानमंत्री।

कनाडा ने दस साल के लिए जारी होने वाला पर्यटक वीजा को क्यों किया बंद

कनाडा सरकार ने मल्टीपल एंट्री वीजा पर अपनी नीति में बड़ा बदलाव करते हुए दस साल वाला पर्यटक वीजा जारी करना बंद कर दिया है। इससे कनाडा आने वाले लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आखिर कनाडा सरकार ने ऐसा क्यों किया, इसको लेकर कई कारण सामने आए हैं। सूत्रों के मुताबिक,इस बदलाव के पीछे की पहली वजह राजनीतिक संकट से जूझ रहे प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो के आवास की कमी बताई जा रही है।

ट्रूडो सरकार ने क्यों लिया ये फैसला

जीवनयापन की उच्च लागत और घटती अनुमोदन रेटिंग पर जनता के गुस्से को कम करने के लिए भी ऐसा किया गया है। ट्रूडो ने इससे पहले ऐलान भी किया था कि वह अस्थायी और स्थायी आप्रवासन रोकों को कम कर रहे हैं।

इमिग्रेशन मंत्री ने दिया था बयान

साथ ही पिछले महीने, इमिग्रेशन मंत्री मार्क मिलर ने कहा था कि कनाडा सरकार को देश में अस्थायी अप्रवासन के प्रवाह को रोकने के लिए पहले ही जल्द से जल्द कोई कार्रवाई करनी चाहिए थी। जिसके कारण आवास संकट पैदा हो गया है। इमिग्रेशन डिपार्टमेंट ने स्पष्ट किया था कि मल्टीपल वीजाधारक को वीजा की वैधता की अवधि में आवश्यकतानुसार ही किसी भी देश से कनाडा में प्रवेश करने की अनुमति होगी। मार्क मिलर ने आगे कहा, खासकर अस्थायी निवासियों की डिमांड पर हमें शायद थोड़ा जल्द कदम उठाना चाहिए था।

विजयन का प्रियंका पर जमात समर्थन का आरोप, कांग्रेस के लिए यह एक चुनौतीपूर्ण स्थिति बन गई है

'भारत में इस्लामी शासन लाने की इच्छा रखने वाले कर रहे प्रियंका गांधी का समर्थन', बोले केरल सीएम पिनराई विजयन

● मंथन संवाददाता

वायनाड। वायनाड में 13 नवंबर को उपचुनाव के लिए मतदान होने जा रहा है। राज्य में उपचुनावों को लेकर राजनीतिक माहौल गरमाया हुआ है। इस बीच केरल के मुख्यमंत्री पिनराई विजयन ने दावा किया है कि कांग्रेस की उम्मीदवार प्रियंका गांधी वायनाड उपचुनाव में जमात-ए-इस्लामी के समर्थन से चुनावी मैदान में हैं। जानकारी के अनुसार ये बयान उन्होंने दो दिन पहले दिया था। जब वेलफेयर पार्टी ऑफ इंडिया (डब्ल्यूपीआई), जो जमात-ए-इस्लामी का राजनीतिक संगठन है, ने राज्य के तीन उपचुनावों में यूडीएफ को समर्थन देने की घोषणा की थी।

विजयन ने अपनी चुनावी सभा के दौरान कहा कि जमात-ए-इस्लामी एक ऐसा संगठन है जो भारत और लोकतांत्रिक व्यवस्था के खिलाफ खड़ा है। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि यह संगठन 'दुनिया को इस्लामी शासन' में लाने की दिशा में काम करता है। साथ ही जम्मू-कश्मीर का उदाहरण देते हुए कहा कि वहां जमात-ए-इस्लामी ने न केवल चुनावों का विरोध किया था, बल्कि हाल ही में भाजपा के समर्थन में भी खड़ा हुआ था। विजयन ने कहा कि कुछ कट्टरपंथी तत्व जमात-ए-इस्लामी के जरिए अपने प्रभाव का

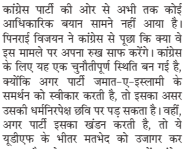

विस्तार करने की कोशिश कर रहे हैं।

कांग्रेस का अभी तक नहीं आया बयान!

प्रियंका गांधी के पर लगे आरोप के बाद कांग्रेस पार्टी की ओर से अभी तक कोई आधिकारिक बयान सामने नहीं आया है। पिनराई विजयन ने कांग्रेस से पूछा कि क्या वे इस मामले पर अपना रुख साफ करेंगे। कांग्रेस के लिए यह एक चुनौतीपूर्ण स्थिति बन गई है, क्योंकि अगर पार्टी जमात-ए-इस्लामी के समर्थन को स्वीकार करती है, तो इसका असर उसकी धर्मनिरपेक्ष छवि पर पड़ सकता है। वहीं, अगर पार्टी इसका खंडन करती है, तो ये यूडीएफ के भीतर मतभेद को उजागर कर सकता है। लोकसभा चुनाव 2024 में कांग्रेस नेता राहुल गांधी केरल की वायनाड और यूपी की रायबरेली सीट से सांसद चुने गए थे। हालांकि, उन्होंने रायबरेली सीट से संसद जाने की राह चुनी। इसके बाद इस सीट पर उपचुनाव में कांग्रेस ने गांधी परिवार की ही प्रियंका गांधी को उम्मीदवार बनाया है।

आगाज से पहले एक्शन

न्यूयॉर्क शहर के मेयर ने घोषणा की है कि न्यूयॉर्क अब अवैध अप्रवासियों को वाउचर जारी नहीं करेगा

ट्रंप के राष्ट्रपति चुनाव जीतते ही अवैध प्रवासियों पर एक्शन शुरू! बंद हुए मुफ्त वाले कूपन

● मंथन विदेश ब्यूरो

वॉशिंगटन। न्यूयॉर्क शहर के मेयर एरिक एडम्स ने घोषणा की है कि न्यूयॉर्क अब अवैध अप्रवासियों को वाउचर जारी नहीं करेगा। डेमोक्रेट्स मेयर एरिक एडम्स प्रवासी परिवारों को प्रीपेड डेबिट कार्ड प्रदान करने वाले कार्यक्रम की समाप्ति की घोषणा करते हुए इस कार्यक्रम को सफल बताया। उन्होंने कहा कि इससे खाद्य पदार्थों की बर्बादी कम हुई है और स्थानीय अर्थव्यवस्था में लाखों डॉलर का निवेश हुआ है।एडम्स द्वारा यह निर्णय ट्रम्प के साथ हुई फोन पर कथित बातचीत के बाद लिया गया। एडम्स ने एक बयान में कहा, 'जैसा कि हम शरणार्थी कार्यक्रमों के लिए अधिक प्रतिस्पर्धी अनुबंध की ओर बढ़ रहे हैं, हमने एक साल की अवधि समाप्त होने के बाद इस पायलट कार्यक्रम के लिए आपातकालीन अनुबंध को आगे नहीं बढ़ाने का फैसला किया है।'

क्या था वाउचर कार्यक्रम

न्यूयॉर्क ने मार्च 2024 में लगभग 900 प्रवासी परिवारों को वाउचर के तौर पर 3,000 डेबिट कार्ड देना शुरू किया था। इसके तहत हर हफ्ते 350 डॉलर तक के

मूल्य वाले कार्ड केवल भोजन और शिशुओं की जरुरतों जैसी आवश्यक वस्तुओं के इस्तेमाल के लिए डिज़ाइन किए गए थे। पायलट कार्यक्रम के विस्तार के साथ, लगात 53 मिलियन डॉलर तक बढ़ने का अनुमान था। न्यूयॉर्क शहर में 2022 से 200,000 से अधिक प्रवासी आ चुके हैं और उनमें से कई के लिए आश्रय और संसाधन प्रदान किए जा रहे हैं।

ट्रंप की पार्टी ने की थी आलोचना

अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव के दौरान प्रवासी परिवारों की यह स्कीम काफी चर्चा में रही थी और ट्रंप की रिपब्लिकन पार्टी ने इसे मुद्दा बनाया था। आलोचकों ने तर्क दिया कि शहर द्वारा वितपोषित कार्ड कम आय वालों के लिए एक जैसे नहीं थे और उन्हें समान लाभ नहीं मिलते थे। कुछ रिपब्लिकन ने चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि डेबिट कार्ड शहर में अधिक अनिर्दिष्ट अप्रवासियों को आकर्षित करेंगे।

डिपोर्टेशन प्रोग्राम पर किया था ट्रंप ने चुनावी वादा

डोनाल्ड ट्रंप ने चुनाव के दौरान अवैध प्रवासियों का मुद्दा जमकर उठाया था और कहा था कि वह अवैध रूप से आने वाले प्रवासियों को रोकेंगे। डोनाल्ड ट्रंप ने चुनावी अभियान के प्रवक्ता ने कहा है कि अगर ट्रंप फिर से चुन कर आते हैं, तो वे अपने चुनावी वादे को पूरा करने के लिए तत्पर रहेंगे। ट्रंप का यह वादा है कि वे अवैध घुसपैठियों को अमेरिका से बाहर करेंगे। दरअसल ट्रंप का पूरा राजनीतिक करिअर अमेरिका में अवैध तरीके से रह रहे प्रवासियों को रोकने से जुड़ा है। वह अमेरिका में इमिग्रेशन के सख्त खिलाफ है। 2016 में राष्ट्रपति बनने के बाद उन्होंने मेक्सिको और अमेरिकी की सीमा पर बकायदा एक दीवार तैयार करवाई थी ताकि मेक्सिको से बड़ी संख्या में दाखिल होने वाले अमेरिकी नागरिकों को रोका जा सके।

इस बार ट्रंप ने पेंसिल्वेनिया में अपनी एक चुनावी रैली में कहा था कि वह राष्ट्रपति बनने के बाद इतिहास का सबसे बड़ा एंटी इमिग्रेंट प्रोग्राम शुरू करेंगे।

1996 में सबीर भाटिया और अमरीका के जैक स्मिथ ने तीन लाख डॉलर की पूंजी से की थी

सबीर भाटिया एक भारतीय उपक्रमी और इ-मेल सेवा हॉटमेल (जो अब आउटलुक कॉम है) के सह-संस्थापक हैं। सबीर द्वारा स्थापित यह इ-मेल सेवा आज विश्व के लगभग 106 भाषाओं में है और फरवरी 2013 तक लगभग 42 करोड़ लोग इसका उपयोग कर रहे थे। हॉटमेल की स्थापना सन 1996 में सबीर भाटिया और अमरीका के जैक स्मिथ ने तीन लाख डॉलर की पूंजी से की थी और सन 1997 में इसका अधिग्रहण दुनिया के तत्कालीन सबसे बड़ी आई टी। कम्पनी माइक्रोसॉफ्ट ने लगभग 2500 करोड़ रूपयों में किया। इस अधिग्रहण के बाद सबीर भाटिया रातोंरात सिलिकॉन वैली के सुपरस्टार बन गए और पूरे विश्व पर छा गए। हॉटमेल के माइक्रोसॉफ्ट द्वारा अधिग्रहण के बाद सबीर ने सन 1999 में एक इ-कॉमर्स कंपनी आरजू.कॉम प्रारंभ किया। बाद में उनकी कंपनी सबसेबोलो ने मुफ्त में मेसेज भेजने वाली कंपनी ja&ut का अधिग्रहण किया। हॉट-मेल के बाद सबीर भाटिया के कई उपक्रम प्रारंभ किये पर उनमें से किसी को भी हॉट-मेल जैसी सफलता नहीं मिल सकी। सबीर भाटिया का जन्म 30 दिसम्बर 1968 को पंजाब की राजधानी चंडीगढ़ में एक पंजाबी परिवार में हुआ था।

स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय में रहते हुए सबीर स्टीव जॉब्स और स्कॉट मैकनेली जैसे उद्यमियों से प्रेरित हुए और स्नातकोत्तर के बाद पीएच.डी. करने के बजाय, एप्पल में शामिल होने का फैसला किया। सन 1995 में सबीर ने जावासॉफ्ट नाम की एक इन्टरनेट कंपनी प्रारंभ की। यह कंपनी लोगों की व्यक्तिगत इनफॉर्मेशन इंटरनेट पर स्टोर करती थी और इन सूचनाओं को इन्टरनेट के माध्यम से किसी भी कंप्यूटर पर देखा जा सकता था। इसी दौरान सबीर जिस कंपनी में कार्य कर रहे थे उसने कंपनी के इंटर्नल नेटवर्क में फायर वॉल लगा दिया जिसके कारण ऑफिस कार्य करते हुए लोग अपना पर्सनल मेल चैक नहीं कर सकते थे। इसी क्षण सबीर के मन में एक विचार आया कि क्यों न ई-मेल को भी इन्टरनेट पर डाल दिया जाए, ताकि किसी भी स्थान से और किसी भी कंप्यूटर पर आप अपनी मेल देख सकें। वे अपने एक सहयोगी जैक स्मिथ के साथ मिलकर इस पर काम करने लगे। दोनों ने पहले बेव आधारित ई-मेल सिस्टम की क्षमता का परिक्षण किया और सिद्ध किया और उसके बाद हॉटमेल बनाने का फैसला किया। ज्यादा से ज्यादा लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए, यह ई-मेल सेवा बिलकुल मुफ्त रखी गयी और वेबसाइट पर विज्ञापन के माध्यम से राजस्व प्राप्त किया जाने लगा। इस प्रकार हॉट मेल का जन्म हुआ और बाकी इतिहास है। इससे पहले दुनिया में इस तरह की कोई भ ई-मेल प्रणाली नहीं थी। 16 फरवरी 1996 को हॉट मेल का जन्म हुआ और 30 दिसंबर 1997 को सबीर भाटिया ने अपनी कंपनी माइक्रोसॉफ्ट को बेच दी। सेवा प्रारंभ करने के छह महीनों के अन्दर ही, हॉटमेल ने दस लाख से अधिक लोगों को आकर्षित किया और जैसे ही यूजर्स की संख्या मे वृद्धि होने लगी, मशहूर आई.टी कंपनी माइक्रोसॉफ्ट का ध्यान इस पर गया और 30 दिसम्बर 1997 को हॉटमेल को 400 मिलियन अमेरिकी डॉलर में माइक्रोसॉफ्ट को बेच दिया गया।

चर्चा जोर पकड़ने लगी है कि क्या ठाकरे परिवार में पर्दे के पीछे कुछ हुआ है?

एक-दूसरे की करेंगे मदद, दोनों पहुंचेंगे विधानसभा! राज-उद्धव ठाकरे में समझौते की चर्चा, माहिम-वर्ली में क्या हो रहा है?

● मंथन संवाददाता

मुंबई। सत्ता का रिमोट कंट्रोल हमेशा अपने पास रखने वाली ठाकरे परिवार की पीढ़ी अब चुनाव मैदान में उतर रही है। 2019 में विधानसभा चुनाव लड़कर आदित्य ठाकरे विधायक बने। इसके बाद अब उनके चचेरे भाई और महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना के अध्यक्ष राज ठाकरे के बेटे अमित ठाकरे विधानसभा चुनाव लड़ रहे हैं। आदित्य ठाकरे एक बार फिर वर्ली से चुनाव लड़ रहे हैं, जबकि अमित ठाकरे माहिम से चुनाव मैदान में उतरे हैं। इस बार का चुनाव इन दोनों के लिए मुश्किल है। ऐसे में चर्चा है कि ठाकरे बंधुओं यानी राज ठाकरे और उद्धव ठाकरे ने दोनों के लिए समझौता कर लिया है।

उद्धव का मैसेज साफ: उद्धव ठाकरे ने साफ किया है कि वह माहिम में कोई चुनावी सभा नहीं करेंगे। हालांकि राज ठाकरे ने आदित्य ठाकरे के वर्ली विधानसभा में एक बैठक की, लेकिन उन्होंने आदित्य ठाकरे की आलोचना करने से परहेज किया। इसलिए इस बात की चर्चा जोर पकड़ने लगी है कि क्या ठाकरे परिवार में पर्दे के पीछे कुछ हुआ है?

दोनों सीटों पर मुकाबला कैसा?: दरअसल इस साल अमित ठाकरे और आदित्य ठाकरे के निर्वाचन क्षेत्रों में त्रिकोणीय लड़ाई है। शिव सेना ने अमित ठाकरे के खिलाफ महेश सावंत को उम्मीदवार बनाया है। यहां शिंदेसेना ने मौजूदा विधायक सदा सरवणकर को फिर से मैदान में उतारा है। आदित्य ठाकरे को एमएनएस के संदीप देशपांडे और शिंदेसेना के मिलिंद देवरा से चुनौती मिल रही है।

उद्धव को मुंबईकरों पर भरोसा: उद्धव ठाकरे ने कहा कि माहिम हमारा निर्वाचन क्षेत्र है। इसलिए मुझे नहीं लगता कि यहां कोई अभियान बैठक आयोजित करने की जरूरत है। मुंबई में महाविकास अघाड़ी की बैठक हुई है। अब मेरी सारी बैठकें सहर से बाहर होंगी। उद्धव ने कहा कि मुझे मुंबईकरों पर भरोसा है और मैं मुंबईकरों को लेकर आश्वस्त हूं।

शिवाजी पार्क में बैठक: शिवाजी पार्क माहिम निर्वाचन क्षेत्र में आता है लेकिन ये बैठक सिर्फ माहिम के लिए नहीं होगी। साफ है कि उद्धव और आदित्य ठाकरे अमित ठाकरे के लिए प्रचार नहीं करेंगे लेकिन पार्टी के कुछ नेताओं ने कहा कि ठाकरे मुंबई के अलग-अलग हिस्सों में बैठकें कर सकते हैं।